

*** सिद्धि तप :** सिद्धि प्राप्ति के लिए यह तप किया जाता है इस तप में एक उपवास पारणा, दो उपवास पारणा इस तरह चढ़ते चढ़ते आठ उपवास पर पारणा करना है । पारणे के दिन बियासना करना है। इस प्रकार यह तप ४४ दिन में पूर्ण होता है ।

विधि :

स्वस्तिक –	फेरी –	खमसणा –	कायोत्सर्ग
८-	८ -	८ -	८

- २० माला -
- १. श्री अनंतज्ञान गुण संयुताय सिद्धाय नमः
- २. श्री अव्याबाध सुख गुण संयुताय सिद्धाय नमः
- ३. श्री अनंतदर्शन गुण संयुताय सिद्धाय नमः
- ४. श्री अनंतचारित्रगुण संयुताय सिद्धाय नमः
- ५. श्री अक्षय स्थितिगुण संयुताय सिद्धाय नमः
- ६. श्री अरुपी निरंजन गुण संयुताय सिद्धाय नमः
- ७. श्री अगुरुलघुगुण संयुताय सिद्धाय नमः
- ८. श्री अनंतवीर्य गुण संयुताय सिद्धाय नमः

*** श्रेणी तप:** गुण स्थानक आरोहण हेतु श्रेणी तप किया जाता है । इस तप से क्षपक श्रेणी की प्राप्ति होती है. यह आगार तप है.

प्रथम श्रेणी में १ उपवास व पारणा करे और दो उपवास कर पारणा करे।

दूसरी श्रेणी में १ उपवास व पारणा, दो उपवास व पारणा तथा तीन उपवास व पारणा करें।

तीसरी श्रेणी में एक, दो, तीन व चार उपवास व पारणा करें।

चौथी श्रेणी में एक, दो, तीन, चार व पांच उपवास व पारणा करें।

पांचवी श्रेणी में एक, दो, तीन, चार, पांच व छ उपवास व पारणा करें।

छट्टी श्रेणी में एक, दो, तीन, चार, पांच, छ व सात उपवास व पारणा करें।

११० दिन में पूर्ण होनेवाले इस तप में ८३ उपवास व २७ पारणे इस प्रकार आते हैं।

विधि :

स्वस्तिक –	फेरी –	खमसणा –	कायोत्सर्ग
१२-	१२ -	१२ -	१२

- २० माला - नमो अरिहंताणं

*** धर्म चक्र तप :** यह तप चहु गती नाशक है। इस तप का प्रारंभ अठ्ठम (तेला) से होता है। एवं ३७ उपवास एकांतर से, अंत में अठ्ठम करके पारणा । इस प्रकार यह तप ८२ दिन में पूर्ण होता है।

विधि :

स्वस्तिक –	फेरी –	खमसणा –	कायोत्सर्ग
१२	१२	१२	१२

- २० माला - धर्मचक्रीणे अरिहंताय नमः

*** मोक्ष दंड तप :** यह तप सर्व विघ्न विपत्ती नाशक है। यह तप करने के लिए गुरू महाराज का डण्डा जिनती मुठ्ठी प्रमाण हो, उतने उपवास एकान्तर से करना । अन्तिम दिन गुरू दण्ड की आंगी पूजा यथाशक्ति करें।

विधि :

स्वस्तिक –	फेरी –	खमसणा –	कायोत्सर्ग
२७	२७	२७	२७

- २० माला - नामो लोए सव्व साहूणं

*** चतुर्विंशति तीर्थकर तप:** २४ तीर्थकरों की आराधना के लिए यह तप किया जाता है। इस तप मे २४ दिन निरंतर एकासना करना है ।

विधि :

स्वस्तिक –	फेरी –	खमसणा –	कायोत्सर्ग
१२	१२	१२	१२

- २० माला – जिन जिन तीर्थकरों के तप चल रहे होते है, उन उन तीर्थकरों के नाम की माला : जैसे "श्री ऋषभस्वामिने नमः", "श्री अजितनाथ स्वामिने नमः", आदि

विधि :

— — — — —

- २० माला –
1. श्री इन्द्रभूति जी गणधराय नमः
2. श्री अग्निभूतिजी गणधराय नमः
3. श्री वायुभूतिजी गणधराय नमः
4. श्री व्यक्तभूतिजी गणधराय नमः
5. श्री सुधर्मास्वामीजी गणधराय नमः
6. श्री मंडितस्वामीजी गणधराय नमः
7. श्री मौर्यपुत्रजी गणधराय नमः
8. श्री अकम्पितजी गणधराय नमः
9. श्री अचलजी गणधराय नमः
10. श्री मेतार्थ्यजी गणधराय नमः
11. श्री प्रभवजी गणधराय नमः

* **बीस स्थानक तपः** यह तप तीर्थकर नाम कर्म प्रदाता है। एक ओली बीस से उपवास से पूर्ण होती है यह बीस उपवास अधिकतम ६ माह में पूर्ण होना आवश्यक है। इस चातुर्मास में यह तप अष्टमी और चौदस के दिन करना है।

विधि :

• २० माला –	स्वस्तिक –	फेरी –	खमसणा –	कायोत्सर्ग
1. ॐ नमो अरिहंताणं	१२	१२	१२	१२
2. ॐ नमो सिद्धाणं	३१	३१	३१	३१
3. ॐ नमो पवयणस्स	२७	२७	२७	२७
4. ॐ नमो आयरियाणं	३६	३६	३६	३६
5. ॐ नमो थेराणं	१०	१०	१०	१०
6. ॐ नमो उवज्झायाणं	२५			
7. ॐ नमो लोए सव्व साहूणं	२७			
8. ॐ नमो नाणस्स	५१			
9. ॐ नमो दंसणस्स	६७			
10. ॐ नमो विणयसं पन्नस्स	५२			
11. ॐ नमो चारित्तस्स	७०			
12. ॐ नमो बंभव्वयधारिणं	१८			
13. ॐ नमो किरियाणं	२५			
14. ॐ नमो तवस्स	१२			
15. ॐ नमो गोयमस्य	११			
16. ॐ नमो जिणाणं	२०			
17. ॐ नमो संयमस्य	१७			
18. ॐ नमो अभिनवनाणस्य	५१			
19. ॐ नमो सुयस्य	२०			
20. ॐ नमो तित्थस्य	३८			

विधि :

— — — — —

- २० माला -